देष में अल्प ज्ञात महिला स्वतन्त्रता सेनानी का योगदान

डॉ कंचन प्रभा
डिपार्टमेंट ऑफ़ पोलिटिकल साइंस
नारायण कॉलेज शिकोहाबाद

भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में असंख्य महिलाओं ने अपना योगदान दिया है। इस संदर्भ में हम कुछ प्रमुख महिलाओं की जीवनी तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में उनके योगदान का अध्ययन कर चुके हैं। उनके अतिरिक्त भी ऐसी महिला स्वतंत्रता सेनानी हैं जिनके बारे में हमारा ज्ञान या तो सीमित है अथवा शून्य के बराबर है। ऐसी भूली–बिसरी महिला स्वतंत्रता सेनानियों में से कुछ का परिचय यहाँ पर दिया गया है।

बेगम जीनत महल : जीनत महल मुगल साम्राज्य के अंतिम बादशाह बहादुर शाह 'जफर' की बेगम थी। उसमें सूझ–बूझ की असाधारण क्षमता विद्यमान थी। 1857 में बहादुर शाह काफी वृद्ध हो गए थे। वे स्वयं को शक्तिहीन समझ कर भारत की आजादी की लड़ाई में भाग लेने से हिचक रहे थे। 30 मई, 1857 को मेरठ छावनी में सिपाहियों ने विद्रोह किया। तत्पश्चात् वे दिल्ली के लिए रवाना हुए। उन्होंने दिल्ली आकर बहादुर शाह से नेतृत्व ग्रहण करने के लिए निवेदन किया किंतु बहादुर शाह हिचक रहे थे। बेगम जीनत महल पर्दे के पीछे से सैनिकों की बात सुन रही थी। बहादुर शाह के इनकार करने पर बेगम ने उनसे कहा कि आज सारे हिन्दुस्तान की आंखे दिल्ली और आप पर लगी हुई हैं। अतः आप इनका साथ दें अन्यथा इतिहास आपको माफ नहीं करेगा। यह सुनते ही बहादुर शाह में जोश पैदा हुआ और उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध नेतृत्व करने का निश्चय किया।

कुछ महीनों तक दिल्ली व अन्य प्रदेशों में विद्रोह की अग्नि धधकती रहीं। अंत में सितम्बर, 1857 में अंग्रेजी ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। 14 सितम्बर, 1857 को बहादुर शाह बंदी बना लिए गए। अगले दिन जीनत महल को भी कैद कर लिया

गया। अंग्रेज सरकार ने बहादुर शाह पर राजद्रोह का मुकदमा चला कर उन्हें आजीवन काले पानी की सजा सुनाई। सरकार ने उन्हें रंगून भेज दिया। उन्होंने बेगम को भी अनेक प्रकार के कष्ट दिए। देश की आजादी के लिए बेगम ने जो दुःख सहे, उन्हें भुलाया नहीं जा सकेगा।[1]

कुमुदिनी मित्रः 1905 में लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन कर दिया। इसके अतिरिक्त समाचार–पत्रों की स्वतंत्रता छीन ली। सीक्रेट एक्ट पारित कर राजनीतिज्ञों व सरकार के विरोधियों को कैद करना आरंभ किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय का सरकारीकरण किया तथा कलकत्ता कॉपोरेशन के अधिकारों में कमी की। उसके इन अनुदारवादी कार्यों से बंगाल की जनता में घोर असंतोष उत्पन्न हुआ जो शीघ्र ही देश के कुछ अन्य प्रदेशों में भी फैल गया। बंगाल में जहाँ एक ओर स्वदेशी आन्दोलन ने जोर पकड़ा, वहाँ दूसरी ओर क्रांतिकारी भी सक्रिय हो गए। इन दोनों प्रकार के आन्दोलनों में महिलाओं ने भी उत्साह के साथ भाग लिया।

ऐसी महिलाओं में बंगाल की कुमुदिनी मित्र का नाम उल्लेखनीय है।

सुशीला देवीः 1918 में पंजाब में रोलेट एक्ट के अन्तर्गत मार्शल लॉ लगाया गया। सैनिक अधिकारियों के अत्याचारों के विरुद्ध पंजाब में आंदोलन चला। इस आन्दोलन में सुशीला देवी ने भाग लिया। वे सियालकोट की निवासी थी। उन्होंने अनेक स्थानों पर भाषण दिए। इन भाषणों में उन्होंने सरकार की नीतियों की कटु आलोचना की तथा महिलाओं से राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिए अपील की।

हर देवीः हर देवी के पति रोशन लाल लाहौर के एक प्रसिद्ध बैरिस्टर थे। वे एक सामाजिक सुधारक भी थे तथा एक हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाली पत्रिका के सम्पादक भी थे। हर देवी ने स्वयं को एक राजनैतिक कार्यकर्त्ता के रूप में प्रस्तुत

---

1 भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी पृ0–148–149

किया। 1907 से उन्होंने अनेक स्थानों पर सभाएँ आयोजित की तथा ऐसे क्रांतिकारियों, जिन पर मुकदमा चल रहा था, की सहायता के लिए धन इकट्ठा किया।

श्रीमती पुरानी देवीः श्रीमती पुरानी देवी हिसार के आर्य समाज की एक प्रमुख कार्यकर्ता थीं। स्वदेशी आन्दोलन के समय जनता में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के लिए उन्होंने पंजाब के विभिन्न जिलों का दौरा किया। उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग तथा विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के लिए आन्दोलन किया।[2]

रुक्मिणी लक्ष्मापतिः 1892 में रुक्मिणी लक्ष्मापति का जन्म आन्ध्र प्रदेश में हुआ। उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। वे कांग्रेस की एक प्रमुख कार्यकर्ता थी। 1930 में उन्होंने नमक कानून भंग किया। नमक कानून भंग करने के आरोप में गिरफ्तार होने वाली वे पहली महिला थी।

सरला देवी –

सरला देवी का जन्म 1872 में हुआ था। वे रवीन्द्र नाथ टैगोर की भतीजी थीं। उनकी माता स्वर्ण कुमारी ने स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार में सक्रिय भाग लिया था। स्वर्ण कुमारी ने अपनी पुत्री सरला में देशभक्ति व देशसेवा की भावना जागृत कर दी थी।

पच्चीस वर्ष की आयु में सरला देवी एक बंगाली पत्रिका 'भारती' की सम्पादक बनी। उन्होंने दो वर्ष तक इसका सम्पादन किया। इस पत्रिका के माध्यम से सरला देवी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता पर जोर दिया। उनके मत में दोनों कौमों की एकता ही यहाँ से विदेशी सत्ता का अन्त कर सकती है।

---

2 भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी पृ0–150

इंडियन नेशनल कांग्रेस के सत्रहवें अधिवेशन में सरला देवी द्वारा रचित एक गीत सामूहिक रूप से गाया गया। इस गीत में उन्होंने विभिन्न प्रांतों के निवासियों को राष्ट्रीय संघर्ष में एकजुट होकर भाग लेने का आव्हान किया था।[3]

सरला देवी ने महिलाओं के आन्दोलनों में भी सक्रिय भाग लिया। 1910 में उन्होंने लाहौर में भारत स्त्री महामंडल की स्थापना की। काफी वर्षों तक वह इसके सचिव पद पर कार्य करती रही। उन्होंने इलाहाबाद व कलकत्ता में भी इस संस्था की शाखाएँ खोली। इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य सभी जातियों व वर्गों की महिलाओं को एक मंच पर लाना था तथा भारत की महिलाओं के नैतिक व भौतिक उत्थान के लिए कार्य करना था। उनकी गतिविधियों को देख कर सरकार ने उन पर लगातार कड़ी दृष्टि रखी। उन्हें कहा गया कि उन्हें अपनी गतिविधियों को सीमित करना होगा।

1919 में सरला देवी गांधी जी की अनुयायी बन गई। वे पंजाब की उन मुट्ठी भर महिलाओं में से थी जिन्होंने जनरल डायर के अत्याचारों का विरोध किया था। महिलाओं को मताधिकार दिलाने के लिए श्रीमती कसंस् द्वारा संचालित आन्दोलन में भी उन्होंने भाग लिया। बंगाल में महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिलाने में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई।

1945 में अपनी मृत्यु तक सरला देवी एक उत्साही कार्यकर्ता बनी रही तथा उन्होंने कांग्रेस द्वारा चलाए गए सभी आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया।[4]

(1) प्रीतिलता वादेदार : प्रीतिलता वादेदार का जन्म बंगाल में एक ऐसे परिवार में हुआ, जहाँ स्त्रियों को उच्च शिक्षा देना उचित नहीं समझा जाता था। क्योंकि प्रीतिलता को पढ़ने का बड़ा शौक था अतः वह अपने घर पर ही अपने भाइयों

3 भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी पृ0–61

4 भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी पृ0–68

को पढ़ाने वाले अध्यापक के मुख से सुना करती थी तथा स्वयं पढ़ती थी। शीघ्र ही उसे यह ज्ञात हो गया कि वह अध्ययन में अपने भाईयों से भी तेज है। उसके कहने पर उसके अभिभावकों ने उसकी शिक्षा का प्रबंध किया। स्कूल में उसके साथ कल्पना दत्त भी पढ़ती थी। इस समय से ही वे दोनों कन्याएँ भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व के विरुद्ध हो गई। वे चाहती थीं कि स्कूल में परमात्मा और इंग्लैण्ड के सम्राट के प्रति निष्ठा की शपथ लेने के स्थान पर परमात्मा व देश के प्रति शपथ ली जाए।

बंगाल की तीन क्रांतिकारी महिलाऐं– प्रीतिलता, कल्पना दत्त व वीणादास।

हाई स्कूल की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात् प्रीतिलता ने ढाका विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लिए चटगांव के एक कॉलेज में प्रवेश लिया। यह संस्था देश भक्तों को लाठी व तलवार चलाने का प्रशिक्षण देती थी। उसने इंडियन सोशलिस्ट रिपब्लिक दल की इंडियन सोशलिस्ट आर्मी (Indian Socialist Army) में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1930 में वह इसकी एक प्रमुख सदस्या थी।

13 अप्रेल, 1930 को सूर्यसेन के नेतृत्व में क्रान्तिकारियों द्वारा चटगांव के शस्त्रागार पर आक्रमण के बाद कुछ क्रांतिकारी बंदी बनाए गए तथा उन पर मुकदमा चलाया गया। इनमें से एक क्रांतिकारी–रामकृष्ण विश्वास को फांसी की सजा दी गई। प्रीतिलता ने जेल में जाकर कई बार उससे भेंट की। 14 दिसम्बर, 1932 को कैप्टन केमेरोन ने घलघोल नामक स्थान पर उसे घेर लिया किंतु मशीनगनों की बौछार के बीच में भी वह भागने में सफल हो गई।[5]

(2) कल्पना दत्तः स्कूल में कल्पना दत्त व प्रीतिलता वादेकर साथ–साथ पढ़ती थी। प्रीतिलता के समान वह भी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रति निष्ठा की शपथ लेने के मन ही मन विरुद्ध थी। स्कूल में अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् कल्पना

5 भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी पृ0–92

दत्त ने कलकत्ता विश्वविद्यालय में अध्ययन आरंभ किया तथा वहाँ पर लेडीज एसोसिएशन की सदस्य बन गई। 1929 में वह क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आई।

(3) **वीणा दास** : वीणा दास के पिता कलकत्ता में संस्कृत कॉलेजियेट स्कूल के प्रधान अध्यापक के पद से सेवा निवृत्त हुए थे तथा सरकार से पेंशन पाते थे। उन्होंने अपनी पुत्री वीणा को उच्च शिक्षा देने की व्यवस्था की। कलकत्ता के डियोसेसन कॉलेज में बंगाल की तीन क्रांतिकारी महिलाएँ– प्रीतिलता, कल्पना दत्त व वीणा दास शिक्षा प्राप्त करते समय उनका सम्पर्क क्रान्तिकारियों से हुआ। स्नातक स्तर की अंतिम वर्ष की परीक्षा की तैयारी करते समय उन्होंने निश्चय किया कि कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में भाग लेते समय वे बंगाल के तत्कालीन गवर्नर सर स्टेनले जेक्सन पर गोली चलाएँगी। इसके लिए उन्होंने कॉलेज के होस्टल तक के कई चक्कर लगाए। उनका कहना था कि वे होस्टल में जाकर अध्ययन के प्रति अधिक ध्यान देती हैं किंतु वास्तव में वे अपनी योजना को कार्यान्वित करने के लिए जानकारी प्राप्त कर रही थीं।

6 फरवरी, 1932 को वीणा दास स्नातक की डिग्री लेने के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में भाग लेने के लिए वहाँ उपस्थित थी। ज्योंही गवर्नर ने अपना दीक्षांत भाषण आरंभ किया, वीणा दास ने उन पर पांच गोलियाँ चलाई। वीणा मौके पर ही गिरफ्तार कर ली गई। कॉलेज होस्टल के उनके कमरे की तलाशी पुलिस ने ली। पुलिस को ऐसे कई सबूत मिले जिससे कि यह सिद्ध होता था कि वे क्रांतिकारी दल की एक सदस्य थी।

संदर्भ सूची

1. भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी पृ0–148–149
2. भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी पृ0–150
3. भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी पृ0–61
4. भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी पृ0–92